ईश्वरीय खज़ानों की खजांचीः ईशु दादी

ब्रह्माकुमारीज़ ईश्वरीय विश्व विद्यालय के इतिहास में कुछ ऐसी महान आत्माएं हैं, जिनका जीवन मौन रहकर भी गहरी प्रेरणा देता है। दादी ईशु ऐसी ही एक तपस्विनी, राजयोगिनी और अत्यंत विश्वसनीय आत्मा थीं। उनका सम्पूर्ण जीवन ईश्वरीय यज्ञ की सेवा, निष्ठा, ईमानदारी और गोपनीयता का अद्वितीय उदाहरण रहा है। उनकी पुण्यतिथि पर उन्हें स्मरण करना, उनके गुणों को अपने जीवन में अपनाने की प्रेरणा देता है।

दादी ईशु ने मात्र 9वर्ष की आयु में ईश्वरीय यज्ञ में प्रवेश किया। यह उनकी विशेषता थी कि स्वयं परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से उनकी पालना की, उन्हें पढ़ाया-लिखाया और आध्यात्मिक जीवन के संस्कार दिए। इतनी छोटी उम्र में ही उन्होंने यज्ञ के प्रति जो समर्पण और लगन दिखाई, वह अत्यंत प्रेरणादायक है।

दादी ईशु की एक विशेष सेवा थी, वो थी बाबा के महावाक्यों को शॉर्टहैंड में लिखना। जब ब्रह्मा बाबा के माध्यम से शिव बाबा मुरली उच्चारण करते थे तो वे उन्हें तुरंत शॉर्टहैंड में लिखती थीं। बाद में उन्हीं लिखित महावाक्यों को सुंदर और स्पष्ट अक्षरों में तैयार किया जाता था, जो सभी सेवाकेन्द्रों तक पहुँचाया जाता था।

इस प्रकार वे परमात्मा के ज्ञान को सहेजने और फैलाने की महत्त्वपूर्ण कड़ी बनीं।

वे केवल एक लेखक ही नहीं, बल्कि ब्रह्मा बाबा की पर्सनल सेक्रेटरी भी रहीं। यज्ञ में होने वाला सारा पत्र-व्यवहार उनके माध्यम से ही संचालित होता था। सेवाकेन्द्रों में आने वाले पत्रों को पढ़कर बाबा को सुनाना, उनके समाचार देना और फिर बाबा के निर्देशानुसार उत्तर लिखना - यह सम्पूर्ण जिम्मेदारी दादी ईशु अत्यंत कुशलता से निभाती थीं।

समय के साथ, जब वे बड़ी हुईं, तो उन्होंने यज्ञ के सबसे महत्त्वपूर्ण विभाग - फाइनेंस और अकाउंट्स की जिम्मेदारी संभाली। यज्ञ का पूरा हिसाब-किताब वे अत्यंत एक्युरेसी और ईमानदारी से रखती थीं। उनका कार्य इतना व्यवस्थित और सटीक होता था कि वह आज भी एक आदर्श के रूप में माना जाता है। इस दृष्टि से वे यज्ञ खजांची के रूप में भी जानी जाती थीं।

दादी ईशु का स्वभाव अत्यंत शांत, गंभीर और रहस्यमयी था। वे कम बोलती थीं, लेकिन उनकी समझ और अवलोकन शक्ति अत्यंत गहरी थी। एक बार किसी आत्मा को देखने के बाद वे उसके संस्कारों और विशेषताओं को याद रखती थीं।

उनकी सबसे बड़ी विशेषता थी - गोपनीयता, वफादारी और ईमानदारी। वे हर कार्य को पूर्ण निष्ठा और विश्वास के साथ करती थीं। बाबा जो कहते थे वे उसी को पूरी सच्चाई और समर्पण से निभाती थीं।

दादी ईशु ने जगदंबा सरस्वती, ब्रह्मा बाबा और बाद में दादी प्रकाशमणि जी के साथ भी यज्ञ की सेवा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने हर समय, हर परिस्थिति में अपनी जिम्मेदारियों को पूरी निष्ठा से निभाया।

सन् 2021 में उन्होंने अपने पुराने शरीर का त्याग कर अव्यक्त स्वरूप धारण किया। किंतु उनके द्वारा सिखाए गए संस्कार जैसे कि एक्युरेट अकाउंटिंग, गोपनीयता, वफादारी और ईमानदारी आज भी यज्ञ में जीवंत है और सभी के लिए मार्गदर्शक है।

उनका जीवन हमें सिखाता है कि सच्ची सेवा केवल बड़े कार्यों में नहीं, बल्कि छोटी-छोटी जिम्मेदारियों को भी पूर्ण निष्ठा और ईमानदारी से निभाने में है।

ऐसी महान तपस्विनी, शांति की प्रतिमूर्ति, राजयोगिनी दादी ईशु को उनकी पुण्यतिथि पर हम हृदय से भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। उनका जीवन सदैव हमें सच्चाई, निष्ठा और समर्पण के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता रहेगा।

दादी ईशु के साथ निजी अनुभव

- राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर

मुझे दादी ईशु के साथ निकट से रहने और उनसे सीखने का सुअवसर प्राप्त हुआ। जब यज्ञ का प्रथम प्रोजेक्ट ज्ञान सरोवर प्रारंभ हुआ, तब उनके समस्त फाइनेंस और अकाउंट्स की जिम्मेदारी मुझे मिली। इस प्रकार प्रतिदिन दादी ईशु के साथ बैठने, उनसे और उनके कार्य करने की शैली को नजदीक से देखने का अवसर मिला।

मैंने उनके जीवन से सीखा कि यज्ञ का कार्य केवल एक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि एक पवित्र ट्रस्ट है जिसे पूरी ईमानदारी, वफादारी और सत्यता के साथ निभाना चाहिए। वे अत्यंत शांति, एकाग्रता और सटीकता के साथ हर कार्य को सम्पन्न करती थीं।

उनके सान्निध्य में रहकर मुझे यह भी अनुभव हुआ कि यज्ञ को किसी भी प्रकार का नुकसान न हो, इसके लिए हर कदम सोच-समझकर और जिम्मेदारी से उठाना आवश्यक है। आज भी मैं उनके द्वारा सिखाए गए सिद्धांतों - ईमानदारी, गोपनीयता और वफादारी को अपने जीवन में धारण करने का प्रयास करता हूँ।

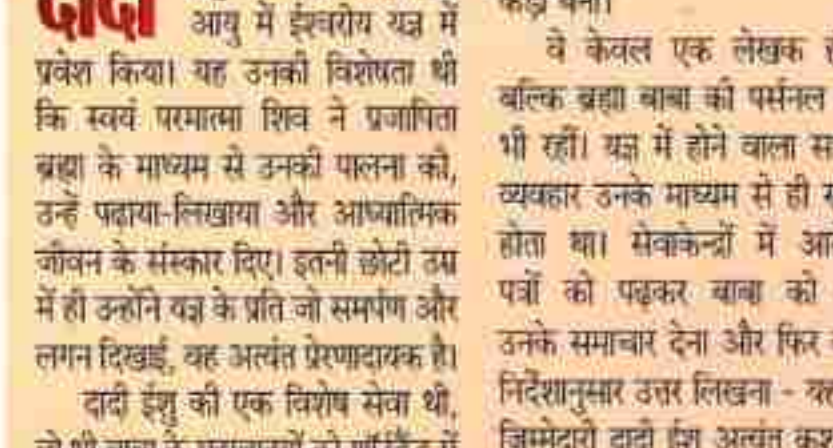

इंदौर-ज्ञान शिखर(म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए इंदौर क्षेत्र निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी तथा अन्य विशिष्ट नारी शक्ति।

ग्वालियर-इंद्र गंज(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ प्रभु उपहार भवन में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में 'वंदे मातरम्-स्वर्णिम भारत' थीम के अंतर्गत 'राजयोग संस्कार और सतयुगी मूल्यों से राष्ट्र निर्माण' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में स्वयं सिद्धा समूह की निर्देशिका श्रीमती मल्लिका तारे, वरिष्ठ स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ डॉ. स्वाति जोशी, वरिष्ठ स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ डॉ. अनुराधा शर्मा, नारायणा ई टेक्नो स्कूल की प्रिंसिपल निधि कुलकर्णी, नगर निगम से समग्र अधिकारी पूर्वी अग्रवाल, समाजसेविका पूर्णिमा अग्रवाल, समाजसेविका श्रीमती आशा सिंह, ब्र.कु. महिमा, ब्र.कु. डॉ. गुरचरण सिंह, ब्र.कु. प्रहलाद तथा अन्य गणमान्य महिलाएं।

नवसारी-गुज.। इंटरनेशनल वुमेन्स डे के उपलक्ष्य में जलालपोर सेवाकेन्द्र पर कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन करते हुए डॉ. भूमिका घोराजिया, डॉ. रूपल कथीरिया, कोमल जी, हीरल, राजयोगिनी ब्र.कु. भानु दीदी एवं ब्र.कु. अल्पना।

बिलासपुर-तखतपारा(छ.ग.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर शिव वरदानी भवन में आयोजित 'वंदे मातरम्-स्वर्णिम भारत' कार्यक्रम में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मधु, महापौर श्रीमती पूजा विधानी, सर्व पंजाबी महिला संस्था की अध्यक्षा रंजीत कौर दुआ, आदर्श पंजाबी महिला संस्था की अध्यक्षा पम्मी गुम्बर, रोटरी क्लब ऑफ क्राउन अध्यक्षा नीरू बिस्ट, राजनीतिज्ञ एवं समाज सेविका शिल्पी तिवारी, श्रीमती शांता कश्यप डिप्टी रेंजर फॉरेस्ट डिपार्टमेंट, श्रीमती मनीषा झा,समाज सेविका, श्रीमती रश्मि लता लेखिका एवं वसुंधरालायंस क्लब की पूर्व जिला अध्यक्षा तथा अन्य गणमान्य महिलाओं की उपस्थिति रही।

इंदौर-कालानी नगर(म.प्र.)। इंटरनेशनल वुमेन्स डे के अवसर पर आयोजित 'वंदे मातरम्-स्वर्णिम भारत' विषय पर परिचर्चा के दौरान दीप प्रज्वलन कार्यक्रम में डॉ. शोभित जैन, पार्षद शिखा संदीप दुबे, असिस्टेंट प्रोफेसर प्रियंका सतरावाला, हार्डीज जिम संचालक रचना महंत, उन्मुक्त आनंद आश्रम की डायरेक्टर सौम्या जैन, ब्र.कु. जयंती दीदी एवं ब्र.कु. सुजाता।

शेगांव-महा.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर दीप प्रज्वलन के पश्चात् समूह चित्र में करुणा सलामपुरिया,सचिव लिनेस क्लब, कविता गुप्ता,अध्यक्षा अग्रवाल महिला मंडल, शीतल नारनोलिया,अध्यक्षा अग्रवाल बहु बेटी मंडल, सुचिता काले,नगर सेविका, कविता पाटिल,प्राचार्य कॉन्वेंट स्कूल, अर्चना कलमशेरे,ग्रामसेवक, ब्र.कु. शारदा बहन एवं ब्र.कु. पूजा।